फंतासी

❑ जॉन हॉल्ट

मेरी छह वर्षीय नन्ही दोस्त, उस दिन अपने भाई और मां के साथ हमारे दफ्तर में आई। जिस समय उसकी मां मुझसे बातचीत करने में व्यस्त हो गई और भाई हमारी अल्मारियों में रखी किताबें उलटने-पलटने लगा, वह दफ्तर के इलैक्ट्रिक टाइपराइटर की ओर भागी जिसका वह पिछले दिनों इस्तेमाल करती रही थी। मैंने उसे कुछ कागज थमाए और जल्दी ही वह ''टाइप'' करने लगी और यह आजमाने में व्यस्त हो गई कि वह कितनी तेज रफ्तार से उसे चला सकती है। संभवत: वह अपनी कल्पना में कार्यकुशलता और सत्ता की कोई फंतासी बुन रही होगी - क्योंकि उसकी मां एक उम्दा टाइपिस्ट है और वह मां को काम करते अक्सर देखती है। हम कुछ देर बतियाते रहे, पृष्ठभूमि में विद्युत टाइपराइटर की व्यस्त घड़घड़ाहट कानों में सुनाई पड़ती रही। क्रमश: गति धीमी होने लगी और तब बिल्कुल सुस्त, एक-दो अक्षर की खट-खट और तब चुप्पी, फिर एक-दो अक्षर। मैंने उसकी मां से कहा, ''अब वह गौर से देखने भी लगी है कि वह दरअसल क्या लिख रही है, लगता है वह सचमुच कुछ लिखने लगी है।''

चंद मिनटों के बाद वह हमारे दफ्तर में घुसी और फुर्ती से बोली, ''पहले तो मैं अंट-शंट ही कर रही थी, तब उस बकवास से ऊब गई।'' इतना कह उसने हमें कुछ ''फॉर्म'' थमाए। मेरे वाले फॉर्म के ऊपर उसने अपना नाम, अपना जिप कोड और अपना फोन नम्बर लिख रखा था। पढ़ने पर उसके नीचे अलग-अलग पंक्तियों में कुछ शब्द थे "naem", "adress", "Zip" व "number"। हर शब्द के आगे उसने एक लंबी रेखा खींची थी (उसने खुद पता लगा लिया था कि लाइन कैसे खींची जाती है), जिस पर मुझे चाही गई सूचना भरनी थी।

फॉर्म भरने के पहले मैंने जानना चाहा कि 'नंबर' के तहत उसे मेरा सोश्यल सिक्योरिटी नंबर चाहिए था या कुछ और। न, उसे मेरा फोन नंबर जानना था। जब फॉर्म भर गए तो वह वापस लौटी और उसने कुछ और फॉर्म बनाए, हरेक फॉर्म पहले वाले से कुछ अधिक ओफिशियल नजर आ रहा था और उसमें पिछले वाले से कुछ अधिक सूचनाएं भी चाही गई थीं। अंतिम कुछ पर उसने एक आयत बनाया था, जिसे हरे क्रेयान से रंगा गया था। उसकी मां ने समझाया कि ये हरे आयत कोरे बैंक चैक का प्रतिनिधित्व करते थे। इन चैकों के विषय में उसकी मां ने बाद में ''ग्रोइंग विदाउट स्कूलिंग'' में लिखा था:

''वीटा को हमारे चैक मोहते हैं। मैं हमेशा हमारे पुराने चैक उसे दुकान-दुकान खेलने के लिए देती हूं। जिन्हें वह अक्सर हमारे रिहाइशी कमरे में रखी अपनी मेज (जो दरअसल लकड़ी के खोखे से बनी है) पर रखती है। वह तीन-चार बार मुझसे पूछ चुकी है कि चैक कैसे काम में लिए जाते हैं। उनसे पैसे का प्रतिनिधित्व कैसे होता है। वह जानना चाहती है कि हमारा पैसा कहां रहता है और बैंक क्या ठीक वही नोट लौटाता है जो हमने जमा करवाए थे'',

आदि-इत्यादि। अब मैं अपनी चैक-बुक का बैलेंस जांचती-लिखती हूं तो वह मुझे ऐसा करते देखना पसंद करती है। पर उसे सबसे अच्छी लगती है चैकों के पुलिंदे को हाथों में थामने की अनुभूति। यह अनुभूति बड़प्पन की अनुभूति है।''

मैं यहां बच्चों के विषय में एक निहायत सरल-सी बात कहूंगा, जो पहले अक्सर कही नहीं गई है। वह यह कि बच्चे फंतासी का उपयोग वास्तविक दुनिया से निकलने के लिए नहीं बल्कि उसमें प्रवेश करने के लिए करते हैं।

बाल-मनोविज्ञान में ''शिशु-सर्वशक्तिमत्ता'' (इन्फंट ओमनीपोटेंस) की काफी चर्चा मिलती है, मानो बच्चों की कल्पना की उड़ानें (फंतासी) वास्तविक दुनिया से भाग कर एक ऐसी दुनिया में जाने की चेष्टाएं हों जहां वे जो कुछ चाहें वह कर सकें। परन्तु बच्चे, कम से कम जब तक उनका वास्ता टी.वी. की तैयार फंतासियों से नहीं पड़ता, 'सर्वशक्तिमान' बनना चाहते ही नहीं हैं। वे इतना भर चाहते हैं कि वे नितांत अक्षम न रहें। वे अपने आसपास के बड़े लोग जो कुछ करते हैं, उसे करना चाहते हैं, - वे पढ़ना-लिखना चाहते हैं, स्वयं कहीं जाना चाहते हैं, उपकरणों व मशीनों का उपयोग करना चाहते हैं। और इस सबसे भी अधिक वे बड़ों की ही तरह अपने तात्कालिक भौतिक जीवनों को नियंत्रित करना चाहते हैं, जहां और जब वे चाहें, वहां और तब, खड़े रहना, बैठना, चलना, खाना और सोना चाहते हैं।

बच्चे कम से कम शुरूआत में गोली की रफ्तार से भी अधिक गति से दौड़ने या ऊंची इमारत को एक कुदान में लांघ जाने के सपने नहीं देखते। ऐसी फंतासियां वयस्कों द्वारा बनाई जाती हैं। उनसे परिचित हो उन्हें अपना बनाने में बच्चों को सालों लगते हैं। बच्चे यह कल्पना तो कर सकते हैं कि विशालकाय व ताकतवर जन्तु उनका पीछा कर रहे हैं। पर बिरले ही उनकी फंतासियां ऐसी होती हैं जहां वे सबसे वह सब करवाएं जो वे चाहते हों या जहां वे दुनिया के मालिक हों या उसे उड़ा डालें।

यह जरूर सच है कि आज बच्चों को बड़ी जल्दी ही जन-मीडिया का चस्का लग जाता है। हम मानवीय इतिहास में कुछ नया घटता देख रहे हैं। हम बच्चों की एक-दो ऐसी पीढ़ियां देख रहे हैं जिनको अपने अधिकांश दिवास्वप्न बने-बनाए मिलते हैं। अगर हमें बच्चों की निखालिस स्वनिर्मित फंतासियां देखनी हों तो हमें उन्हें तब पकड़ना होगा जब वे बहुत छोटे हों। परन्तु हाल तक, चौथे दशक के अंत और पांचवे के प्रारंभ तक, जब से मैं बच्चों पर ध्यान केंद्रित करने लगा, उनके परस्पर खेले जाने वाले 'काल्पनिक खेल' घर-घर जैसे थे जहां कोई 'मां' बनता था, कोई 'डैडी' और कोई 'बेबी' या वे स्कूल-स्कूल या डॉक्टर-डॉक्टर खेलते थे। वे सुपरमैन बनने की कल्पना नहीं करते थे। सुपरमैन जैसी फंतासियां बच्चों ने उन वयस्कों से सीखीं हैं जो उन्हें ईजाद करते और बेचते हैं।

जब मैं और मेरी बहन तकरीबन पांच-छह साल के थे, तब गर्मियों में हम अपनी नानी के पास माइन जाते थे। वहां हमारी उम्र के बच्चे नहीं थे और आज के हिसाब से खास कुछ करने को भी न था। सो हम अपने काल्पनिक खेलों में बखुशी घंटों बिताते थे। हमारे पसंदीदा खेलों में एक था रेलगाड़ी का खेल। माइन जाना हमारे लिए एक रोमांचक यात्रा हुआ करती थी, क्योंकि इस दौरान हम एक रात रेलगाड़ी में ही सोते थे। यात्रा के समय जब कभी मुझे ऊपरी बर्थ मिलती तो मैं कुछ घबराता भी था, क्योंकि मुझे यह लगता था कि कहीं बर्थ मुझ समेत ही खटाक से बंद न हो जाए। बाद में मैं थोड़ा बहुत समझने लगा कि चीजें काम कैसे करती हैं। तब मैं बड़ी सावधानी से देखता था कि बर्थ के दोनों हत्थे सही तरह से अपने खांचे में लगे हैं या नहीं ताकि वह बंद न हो जाए। इस भय के बावजूद यह यात्रा बेहद उत्तेजक होती थी, डाइनिंग कार में खाना खाना, तब सोने वाले डिब्बे को रात में सोने के लिए तैयार होते देखना। भारी हरे रंग के पर्दों के बीच सोने के लिए बर्थ पर चढ़ना, खिड़की के बाहर ग्रामीण इलाकों को देखना। ट्रेनों पर रात्रि यात्रा करना अब भी मेरा पसंदीदा कामों में एक है।

सो जब हम नानी के घर पहुंचते तो स्वाभाविक ही था कि हम अपनी उत्तेजक यात्रा को फिर से जीते। नानी के घर के बाहर कैनवस की बनी कई फोल्डिंग कुर्सियां थीं जो निर्देशक की कुर्सी नाम से जानी जाती हैं। जेन और मैं उन्हें ऐसे आगे को गिरा लेते थे जिससे उसकी पीठ का हिस्सा ऊपर को रहे और वे हाथों पर टिक जाएं। हम इन्हें जोड़ों में, आमने सामने रख लेते थे जिससे उनकी पीठ एक दूसरे को छुए। तब हम नानी के पुराने तौलिए कुर्सियों के बगल पर ढक देते थे। यों जो छोटी-सी ढकी जगह बनती उसे हम ट्रेन की निचली बर्थ मान लेते (दोनों के लिए एक-एक निचली बर्थ) और तब घंटों वहां बिताते। क्या बातें होती थीं? काश मुझे वह याद होता। पर यह खेल हम दिनों-दिन तक खेलते। हम ट्रेन के कंडक्टर या ड्राइवर बनने की कल्पना नहीं करते थे हम तो खुद बस ट्रेन की यात्रा करने की कल्पना करते थे।

कुछ सालों बाद हमारी फंतासियों पर आंशिक रूप से रेड़ियो धारावाहिक हावी हो गए, जिनके बारे में हमारे माता-पिता जानते थे और आंशिक रूप से एक किस्म का अपराध साहित्य हावी हुआ जो 'डाइम' नावल्स' के रूप में प्रसिद्ध था, जिसके विषय में हमारे माता-पिता अनभिज्ञ थे। हम ये 'डाइम' उपन्यास छुप-छुप कर

खरीदते और पढ़ते और बड़ी सावधानी से छुपा कर रखते थे। सुबह नाश्ते के समय अपनी पांच वर्षीया बहन के सामने (पर माता पिता के सामने कतई नहीं) जेन और मैं यों स्वांग करते मानो हम विभिन्न काल्पनिक साहसिक कारनामों में भागीदार हों। कभी हमारे काल्पनिक कारनामे रेडियो धारावाहिक ''बैंक रॉबर्स'' के किसी कार्यक्रम के इर्द-गिर्द हुआ करते थे जो हमने उस वक्त सुना होता जब पिता काम से देर वाली ट्रेन से लौटते। पर अक्सर हमारे सुबह की काल्पनिक घटना हमारे पसंदीदा डाइम उपन्यास 'द स्पाइडर' से जुड़ी होती थी। स्पाइडर दरअसल एक अमीर नौजवान रिचर्ड वेंटवर्थ का उपनाम था जो हर माह किसी न किसी नए अपराधी गिरोह के खिलाफ जंग छेड़ता था जिसके पास कोई अजीबोगरीब अस्त्र होता था। यह अस्त्र कभी विषैली गैस होती जो छूते ही व्यक्ति को मार डालती थी, या कोई विस्फोटक (ईल मछली से बना) जो समूचे शहर को खत्म कर सकता था, या कोई महामारी जो करोड़ों लोगों में फैल सकती थी।

पर तब भी, दस वर्ष की उम्र में भी मैं 'द स्पाइडर' के नायक के बदले खुद को उसके लेखक के अधिक करीब महसूस करता था। मेरे फंतासी जीवन का एक हिस्सा वह था जहां मैं किसी ऐसे विनाशकारी अस्त्र की कल्पना करने में बिताता जो लेखक को अब तक सूझा न हो। मैं यह कल्पना भी करता कि मैंने एक कहानी लिख डाली है, वह पत्रिका में छपी है। पत्रिका के मृखपृष्ठ पर मैं कहानी का नाम और उस महा-अस्त्र के विनाश के चित्र की कल्पना करता। इन अस्त्रों में मुझे एक ही याद है। मैंने 'तरल वायु (लिक्विड एयर) के विषय में कुछ पढ़ा था, जो पहली बार जानने पर हर बच्चे को आकर्षित करती है। यह अस्त्र जिस किसी के संपर्क में आता उसे जमा देता था। साल-दो साल बाद मैं एक मासिक पत्रिका पढ़ने लगा जिसका नाम था 'द अमेरिकन बॉय' और तब मैं उस पत्रिका के लिए कहानियां लिखने की कल्पना करने लगा। एकाध कहानियां शुरू भी कीं, उसके कथानक के बारे में सोचा, कुछ पन्ने टाइप भी किए। पर इससे आगे न बढ़ सका क्योंकि मैं जो लिख रहा था उस बारे में कुछ भी नहीं जानता था- क्योंकि जब मैं विषय चुनता तो उसे इसलिए नहीं चुनता कि मैं उस बारे में कुछ जानता था बल्कि इसलिए क्योंकि उस विषय पर पत्रिका में अब तक कुछ छपा ही नहीं था।

बाद में वयस्क बनने पर छठे दशक तक मैंने बाल फंतासी पर या फंतासी के उपयोग पर खास विचार ही नहीं किया। छठे दशक के प्रारंभ में मैं उन चीजों का अवलोकन करने लगा, उन पर लिखने लगा जो इस पुस्तक के मूल-रूप में शामिल की गई। तब भी मेरी रुचि बालकों की फंतासियों में कम थी और इस बात में अधिक

थी कि वे दुनिया के बारे में क्या सोचते हैं और उसकी समस्याओं का समाधान कैसे करते हैं। पर तब, जब बिल हल और मैं पांचवी कक्षा को तीन-चार साल साथ-साथ पढ़ा चुके थे बिल ने मुझे कुछ बताया जिससे मैं फंतासी के विषय पर नई तरह से विचार करने लगा। बिल व उसके दो सहकर्मी, बिल द्वारा विकसित नई सामग्री के प्रति बालकों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन कर रहे थे। यह सामग्री वस्तुओं को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत करने के तरीकों तथा प्रतीकात्मक तर्क से बालकों को परिचित करवाने से संबंधित थी। बिल ने पहले ही इस सामग्री का आठ से दस वर्ष के बालकों के साथ सफलतापूर्वक उपयोग किया था और अब वह जानना चाहता था कि पांच वर्षीय बालक उन पर कैसी प्रतिक्रिया करते हैं। पर जब बिल व उसके सहकर्मियों ने पांच वर्षीय बच्चों को ये सामग्रियां दीं उनसे कुछ सरल से अभ्यास करने को कहे तो बच्चे कुछ कर ही नहीं पाए। बार-बार हर तरह से बात समझाने की कोशिशें नाकाम रहीं। वे पूरी तरह अटके से रहे। तब वयस्कों ने एक नया रास्ता अपनाया उन्होंने वही सामग्रियां बच्चों के एक दूसरे समूह को दी, और कहा कि वे उनसे जो चाहें कर सकते हैं, उन्होंने बच्चों को उनसे मनमर्जी से खेलने दिया। बच्चे इच्छा से उन्हें लोग मान खेल

सकते थे, या जानवर, या मकान। तब तक, जब तक वे उकता न चुकें और उनसे कुछ और, कुछ रोचक करने को तैयार न हो गए। तब उन्होंने बच्चों को ठीक वही अभ्यास सौंपे और इस बार बच्चों को उन्हें करने में कोई दिक्कत न आई। पर यह तभी हो सका जब बच्चे पहले सामग्री से अपनी इच्छा से, मुक्त रूप से, खेल चुके थे। वयस्कों के लिए जो सामग्री गणितीय अमूर्तता का प्रतीक थी, उसे बच्चों को पहले अपनी जीवन्त दुनिया का हिस्सा बनाना पड़ा, 'उन्हें वास्तविक बनाना पड़ा'। यह काम उनकी कल्पनाशक्ति ने उनकी फंतासी ने किया।

अगले कई वर्षों के दौरान मैंने इस घटना को अक्सर याद किया। और तब मुझे अपने जीवन में फंतासी के उपयोग तथा महत्त्व की बात भी बेहतर समझ आने लगी। उन वर्षों में मुझे एक मॉन्टेसरी सम्मेलन में आमंत्रित किया गया और मैंने तैयारी के लिए मॉन्टेसरी सिद्धांत तथा पद्धति पर कुछ पुस्तकें भी पढ़ीं। मैंने तब जाना कि मारिया मॉन्टेसरी और उसके अनुयायी बच्चों की फंतासी का अनुमोदन नहीं करते थे। उन्हें लगता था कि बच्चों को 'वास्तविक जगत' को तलाशना चाहिए, जबकि उनकी फंतासी उन्हें इससे भागने का रास्ता उपलब्ध करवाती थी। जाहिर है कि कुछ मॉन्टेसेरियन इससे असहमत थे। आज भी कई या अधिकांश मॉन्टेसरी शालाएं संभवत: बालकों को कल्पना करने से हतोत्साहित करती हैं।

सभी मॉन्टेसरी शालाओं में प्रयोग में ली जाने वाली सामग्रियों में दो सामग्रियां हैं जिन्हें गुलाबी मीनार (पिंक टावर) और भूरी सीढ़ियां कहा जाता है। गुलाबी मीनार लकड़ी के घनों की क्रमिक श्रृंखला है जो एक इंच के आकार से चार इंच के आकार तक की होती है। बच्चे सबसे बड़ा घन सबसे नीचे रख, उससे छोटा ऊपर रखते हैं, जब तक सबसे छोटा घन मीनार के शीर्ष पर न रख दिया जाए। इस अभ्यास के पीछे विचार है कि बच्चे ''इससे बड़ा'' व ''इससे छोटा'' के तुलनात्मक आकार के विचार को स्पष्ट समझ लेंगे। भूरी सीढ़ियों में लकड़ी के चौकोर रॉड होते हैं जिसकी चौड़ाई हर तरफ एक इंच की होती है पर लंबाई अलग-अलग। यहां भी बच्चों को उन्हें सबसे बड़े को नीचे रख, घटती लंबाई के क्रम में शेष को रखकर सीढ़ी बनानी होती है। अभ्यास इस अपेक्षा से करवाया जाता है कि बच्चे लंबाई के विचार को समझेंगे।

बच्चे मीनार और सीढ़ी बनाने में काफी समय लगाते हैं। इससे कुछ उपयोगी बातें भी निश्चित रूप से सीखते होंगे परन्तु परंपरागत मॉन्टेसरी शालाएं बड़ी दृढ़ता से बच्चों को इस सामग्री से रेल, या मकान, या लोग, या कुछ और मानकर उपयोग नहीं करने देतीं। अगर बच्चे ऐसे करते दिखें तो शिक्षिका को जाकर यह कहना होता है ''मीनार या सीढ़ी का उपयोग हम ऐसे नहीं करते।'' और तब उसे बच्चे को उसका सही उपयोग बताना होता है। अगर बच्चा फिर भी उनका उपयोग अपनी कल्पना से करता रहे तो शिक्षिका को कहना होता है, ''तुम अभी इसके उपयोग के लिए तैयार नहीं हो।'' व्यावहारिक रूप से देखें तो यह तरीका कारगर भी रहता है - जल्दी ही सभी बच्चे सामग्रियों का 'सही' उपयोग सीख लेते हैं। वे यह भी सीख लेते हैं कि उनकी 'फंतासी' वैध नहीं है और उसे गुप्त ही रखना चाहिए।

मॉन्टेसरी शालाएं जिस भी हद तक आज भी ऐसा सोचती व करती हैं, मुझे लगता है कि वे गलत कर रही हैं। क्योंकि सच तो यह है कि जब बच्चे लकड़ी के इन टुकड़ों को रेल, या ट्रक, या मां-डैडी मान खेलते हैं तो वे वास्तविकता से पलायन नहीं कर रहे होते। बल्कि इसके ठीक विपरीत वे इन बेजान टुकड़ों में यथा संभव वास्तविकता डाल रहे होते हैं। ये तो वयस्क ही हैं जो उन टुकड़ों में से सारी वास्तविकता निकाल केवल ''आकार'' या ''लंबाई के अमूर्त विचार शेष छोड़ते हैं। वयस्क ही दरअसल यह कह रहे होते हैं कि इन टुकड़ों में कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है सिवाए इसके कि उन्हें नापा जा सकता है - क्योंकि यही तो बच्चों को उनके साथ करना है, एक की तुलना में दूसरे को नापना है। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि कल्पना करने वाले बच्चे ही इन टुकड़ों में वास्तविकता जोड़ते हैं और वयस्क उसे दूर हटाना चाहते हैं।

बिल हल के अनुभव ने यह स्पष्ट कर दिया कि, आकार व लंबाई सिखाने की दृष्टि से भी, परंपरागत मॉन्टेसेरियन गलती पर हैं। वे इन सामग्रियों से बच्चों को जो भी सिखाना चाहते हों, बच्चे उसे तब ही अधिक जल्दी सीखेंगे, जब उन्हें उनसे पूरी आजादी से खेलने दिया जाएगा।

आस्ट्रेलिया में 1981 की गर्मियों में एक मित्र ने मुझे 'कैरोलाइन व्हाइट' की एक रिपोर्ट की प्रति दी। रिपोर्ट ''लेखन के प्रारंभ की जांच'' (एन इन्वेस्टिगेशन ऑफ बिगिनिंग राइटिंग) शीर्षक से थी। यह रिपोर्ट एडेलेड कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड एज्यूकेशन के भाषा वाचन तथा संप्रेषण अध्ययन केन्द्र के 'ओकेजनल पेपर्स' के लिए तैयार की गई थी। यह एक बेहद मोहक व आल्हादित करने वाली रिपोर्ट है जो फंतासी को एक दूसरी तरह काम करते दर्शाती है। कैरोलाइन ने बारह सप्ताह तक आठ पांच वर्षीय बच्चों के लेखन का अध्ययन किया। वे इस परियोजना के शुरूआत के विषय में लिखती हैं : अगस्त 1980 के प्रारंभ में (बच्चे जून से स्कूल जाने लगे थे) मैंने कक्षा के बच्चों से अपने पंसदीदा खानों की सूची बनाने को कहा। कई बुड़बुड़ाहटों, कराहों और घसीटों और चेहरा

बिगाड़ने के बाद मैंने सूचियां इकट्ठी कीं और उनमें से आठ सूचियां चुनीं। मैंने उन छह बच्चों को चुना जिनका काम सही वर्तनी के सबसे नजदीक था और दो उनको जिन्होंने मुझे बड़े आत्मविश्वास के साथ ढेरों घसीटामार प्रतीक थमाए थे। ये दोनों लड़कियां नियमित रूप से अपने सहपाठियों को ''लिखा'' करती थीं और लगता यह था कि उन्हें घसीटामार अलाय-बलाय से बड़ा आनंद आता था।

तब मैंने इन आठों बच्चों से बात की, समझाया कि मुझे कॉलेज के लिए दिया गया एक काम करना है और उसमें मुझे उनकी मदद चाहिए। बच्चे मेरी मदद के लिए ''लिखने'' को सहमत हुए। उनमें से कुछ पहले हिचकिचा रहे थे क्योंकि उन्हें लगता था कि वे लिखना-जानते नहीं हैं; सो यह काम उन्हें कठिन लग रहा था। ये वे बच्चे थे जिनके लेखन कार्य को मैंने अच्छा प्रयास माना था। पर मेरी पत्र लेखिकाओं को कोई भय नजर नहीं आया और उन्होंने ही दूसरों को समझा-बुझा कर मेरी मदद को तैयार किया !

कैरोलीन व्हाइट बताती हैं कि सितंबर में होने वाली छुट्टियों के पहले जूलिया (पत्र लेखिकाओं में एक) ने अपनी पहली ''ऊलजुलूल'' कहानी लिखी, जिसे रिपोर्ट में पूर्णत: शामिल किया गया। इसमें ढेरों अक्षर, या अक्षर सरीखे आकार थे जो पन्ने पर कमोबेश लाइनों में व्यवस्थित थे, पर इन अक्षरों को शब्दों, या कहें अक्षर-समूहों में नहीं रखा गया था। इन घसीटामार पंक्तियों का हमारे लिए कोई अर्थ नहीं है। पर जूलिया के लिए वे बेहद महत्त्वपूर्ण थे; वह कुछ कहना चाहती थी और कह भी रही है। सुश्री व्हाइट बताती हैं कि जूलिया ने ''कहानी'' कुछ समय के लिए वापस ली और छुट्टियों में कहीं खो दी। जूलिया इस बात पर बड़ी दुखी थी, उसने बताया कि उसकी कहानी दरअसल ''पूरी नहीं'' थी। वह इसी प्रकार लिखती रही, यद्यपि समय के साथ उसके बनाए प्रतीक वास्तविक अक्षरों के समान लगने लगे और वह उन्हें क्रमश: शब्द-समान समूहों में लिखने लगी। पर जब भी वह लिखती तो उसका दरअसल उसके लिए कुछ अर्थ भी होता और वह सुश्री व्हाइट से यह अपेक्षा भी रखती कि वह जो कहना चाहती है उसे वे पढ़कर जान लें।

जूलिया जैसे बच्चे जिम्मेदारी मुक्त घसीटामार चरण में ढेरों लिख सकते थे। पर अगला चरण कुछ लेखकों के लिए तब काफी परेशानियां भरा सिद्ध हुआ जब उन्हें महसूस हुआ कि उनका घसीटामार लेखन पाठक पढ़ नहीं पाते। अध्ययन प्रारंभ करने के पांच सप्ताह बाद मुझे लगा कि जल्दी ही जूलिया भी इस सदमे का सामना करेगी। मैं उसकी मां को इस बाबत चेता देना चाहती थी। जिस सुबह मैं उनसे बात करने वाली थी वे स्वयं इस समाचार के साथ आईं। ''जूलिया अपनी नानी को अब खत नहीं लिखेगी क्योंकि नानी उसे पढ़ नहीं पाती हैं।''

बड़ी दुखद बात थी ! इस छोटी-सी कहानी के शेष हिस्से में जूलिया ने ''वास्तविक'' लेखन करने से इन्कार किया, मतलब ऐसा लेखन जिसमें वह कुछ कहना चाहती थी। उसने केवल किताबों से उतारे अक्षरों की पंक्तियां भर लिखीं। वह जानती थी कि ये अक्षर सही हैं, पर वह यह भी जानती थी कि वे कुछ नहीं कहते। बेचारी जूलिया।

इस पुस्तक के पूर्व भाग में मैंने कुछ तीन वर्षीय बच्चों का उल्लेख किया है जिन्होंने मेरे विद्युत टाइपराइटर का स्कूल में उपयोग किया था। इस पुस्तक का प्रारंभ करने के कुछ ही समय बाद मैंने यह लिखा था:

अधिकतर समय बच्चे दबाई गई 'खटके' और तब कागज पर उभरने वाले आकार के बीच का रिश्ता नहीं समझ पाते हैं। दरअसल कागज पर छपने वाले निशानों में उनकी खास रुचि ही नहीं लगती। वे यह जानते हैं कि कागज पर कुछ आकार हैं, पर वे कैसे लगते हैं इसकी उन्हें परवाह नहीं है।

कुछ बच्चों ने एक हद तक इस विचार को समझ लिया है कि टाइपराइटर बातें कहने का उपकरण है। पर उन्हें यह नहीं सूझा है कि वे मुझसे पूछें कि जो वे कहना चाहते हैं उसे कैसे कहें। अक्सर टाइपराटर पर बेतरतीब खटर-पटर करते हुए वे मुंह से बोलते हैं कि वे यह या वह कह रहे हैं। मैं काफी धीमे स्वर में जो उन्होंने लिखा होता उसे उच्चारित करने की कोशिश करता हूं और उन्हें बताता हूं कि उन्होंने यह लिखा है पर वे सोचते हैं कि मैं बेवकूफी कर रहा हूं। उनके लिए टाइपराइटर इच्छा-शक्ति से चलता है। कुछ कहना चाहने का मतलब है उसे कह चुकना।

एक नन्हे ने यह सीख लिया कि जब मैं उसका नाम लिखता हूं तो पहला अक्षर जिसे दबाता हूं वह जे है। उस दिन, जब कोई दूसरा बच्चा टाइप कर रहा था, उसने 'जे' की ओर संकेत करते, हुए कहा 'वह मेरा अक्षर है, उसे न दबाना।' एक और बच्चा फर्राटे से अक्षर पर अक्षर खटखटाते जा रहा था कि अचानक बोल उठा, ''धत् ! मैंने गलती कर दी।''

ये बच्चे टाइपिंग सीखने की कोशिश नहीं कर रहे थे। वे कुछ भी करने की कोशिश नहीं कर रहे थे। उनकी वास्तविक-फंतासी यह थी कि वे कुछ ऐसा कर रहे थे जो वयस्क करते हैं - अक्षरों के खटके दबाकर तेज गति से टाइपराइटर का उपयोग, ताकि वे

कुछ कह सकें। कुछ समय बाद वे इस ''बकवास से थक जाएंगे'' और यह सोचने लगेंगे कि दरअसल कुछ वास्तविक कैसे लिखा जाए। उनकी कल्पना उन्हें वास्तविकता में कुछ दूर घसीट चुकी होगी, टाइपराइटर पर टाइप करते वयस्कों की वास्तविकता की ओर, और तब वे यह भी सीखना चाहेंगे कि वयस्कों की तरह ऐसा कैसे किया जाता है। अर्थात् वे चाहेंगे कि उनके प्रयासों का नतीजा लोग सच में पढ़ सकें। जूलिया के लिए वह दिन कितना खुशनुमा होगा जब वह अंतत: एक ऐसा खत लिखे जिसे उसकी नानी वास्तव में पढ़ सके।

अपने आस-पास की दुनिया को व्यवस्थित करने और उसे समझने की कोशिशों में बच्चे फंतासी और खेल का कम से कम दो प्रकार से उपयोग करते हैं। अव्वल तो वे वास्तवविकता का परीक्षण करने के लिए उसका इस्तेमाल करते हैं; ठीक वैसे जैसे वयस्क गणितीय मॉडल्स या कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं, अर्थात् यह प्रश्न पूछने के लिए ''क्या होगा अगर ....?'' बच्चों द्वारा रचे गए वास्तविकता के मॉडल्स काफी अनगढ़ होते हैं क्योंकि उन्हें अनुभव भी नहीं होता। परन्तु अपने फंतासी खेलों में वे वास्तविकता के नियमों की उतनी करीब से अनुपालना करते हैं जितना वे उन्हें समझ पाए होते हैं। जब छोटे बच्चे रेत की ढेरी पर अपने ट्रकों से कोई सड़क या बांध या कुछ और बनाने का खेल खेलते हैं तो वे अपने समक्ष वास्तविक समस्याएं रखते हैं। इस भार को यहां से वहां कैसे ले जाया जाएगा और तब यथासंभव जायज तरीकों से उसका समाधान भी करते हैं। अगर वे रेत पर अपना ट्रक आगे या पीछे की ओर ले जा रहे हों और कोई बाधा आ जाए तो वे ट्रक को उस बाधा पर से कुदाते या उड़ाते नहीं हैं बल्कि उसके आस-पास से निकलने का रास्ता तलाशते हैं, ठीक वैसे जैसा कोई ट्रक चालक वास्तव में करे। वे सुपरमैन बनने की कल्पना नहीं करते जो ट्रकों को उठा ले। वे तो असली ट्रक चलाने वाले असली ट्रक ड्राइवर बनने की ही कल्पना करते हैं। संक्षेप में अपने तमाम अन्य खेलों की तरह यहां भी वे अपने अनुभवों की सीमाओं को ही विस्तृत करते हैं।

नैन्सी वैलेस की होम स्कूलिंग पर अब तक अप्रकाशित पुस्तक ''द डॉल गेम'' नामक अध्याय के पहले हिस्से में दिए गए उस खेल का वर्णन मैं यहां प्रस्तुत कर रहा हूं, जो उसके बच्चे इश्माइल (दस वर्ष) और वीटा (छह वर्ष) हर दिन खेलते हैं :

मार्जरी, मां-गुडिया, बगीचे में आलू इकट्ठे कर रही है। इश्माइल बड़ी सावधानी से बिना आड़े आए उसकी मदद करता है। आलू नीले और हरे कंचे हैं जिन्हें वे चीनी मिट्टी के कटोरों में रखते जाते हैं। बगीचे के किनारे पर गुलाबी कागज के फूलों को चरते दूसरे पशु हैं - एक लाल प्लास्टिक की भेड़, एक कांच का सूअर और एक सफेद धातु का घोड़ा। पशु आधे इंच से ज्यादा बड़े नहीं हैं, जबकि मार्जरी छह इंच की है। पर इस असंभवता से किसी को फर्क नहीं पड़ता।

गुडिया परिवार के शेष सदस्य सोने के कमरे के फर्श पर बिछी दरी के बीचों-बीच बने अपने घर की दूसरी मंजिल में यों ही पड़े हैं। थॉमस जो पिता है, दीवार घड़ी को घूर रहा है, गवर्नेस-आंटी एक घायल सिपाही खिलौने के सिरहाने खड़ी है, जो कपड़े

के तौलियों से बने बिस्तर पर लेटा है। और सभी बच्चे एक मेज के इर्द-गिर्द बैठे हैं जो वीटा द्वारा बनाए गए फूलदार मेजपोश से ढकी है।

नीले-वेलवेट फीते की नदी के उस पार स्थितियां अधिक जीवन्त हैं। वीटा लकड़ी के बने नन्हे लोगों के परिवार की पिकनिक करने मे मदद कर रही है। वे अपने सादे से घर के सामने एक टेबल के इर्द-गिर्द खड़े हैं जिस पर लाल-चौकड़ियों का मेजपोश है। वे हरी शैंपेन की बोतल और एक झागदार बीयर के कुछ बड़े से मग से पी रहे हैं। खाने के लिए उनके सामने भुने हुए मांस का बड़ा बर्तन है।

अचानक सभी आंखें मां की ओर मुड़ती हैं। ''देखो, मुझे बच्चा हुआ है !'' वीटा घोषणा करने में उसकी मदद करती है। और सच में मां के पास ही फर्श पर नन्हा-सा प्लास्टिक का शिशु है। वीटा सबकी मदद करती है ताकि वे पास आकर उसे देख सकें। तब वह पिता को शिशु के लिए पालना और दूध की बोतल ढूंढ़ने ले जाती है। जब शिशु आराम से पालने में रख दिया जाता है तो नन्हे लोगों की पिकनिक आगे बढ़ती है।

'हु-हु-हु' एक पिकनिक करने वाला कहता है। अचानक मानो वास्तविक जगत के प्रति सचेत हो वीटा नदी के उस पार स्थित इश्माइल के सदाबहार हरे जंगल के परे से पूछती है, ''उनका कौन-सा मौसम चल रहा है ?'' ''पतझड़'', वह जवाब देता है। ''पतझड़ ?'' वह शिकायती स्वर में कहती है, ''पर हमारे यहां तो अभी सर्दियां भी नहीं आई हैं और मैंने सोचा कि पतझड़ सर्दी के बाद आता है। और अगर मार्जरी आलू खोद रही है तो अभी गर्मी ही होगी, क्योंकि नैन्सी ने हमारे आलू गर्मियों में खोदे थे।'' इश्माइल आलू के खेत में मार्जरी की मदद करते-करते ही बड़े धैर्य से समझाता है, ''न वीटा पतझड़ गर्मी और सर्दी के बीच आता है, पता है न जब पत्तियों का रंग बदलता है और पाला पड़ता है। मुझे मालूम है कि नैन्सी ने आलू गर्मियों में ही खोद लिए थे, पर वो इसलिए क्योंकि पाला जल्दी पड़ा था। कई बार गर्मियों में समय से पहले ही पाला पड़ जाता है। पर लोग अक्सर अपने खेतों से पतझड के समय ही उपज निकालते हैं और इसलिए ही तो हैलोवीन पर जैक ओ लैन्टर्न्स बनाया जाता है और थैंक्सगिविन्ग्स पर बड़ी दावतें होती हैं। उसके बाद क्रिसमिस आती है, पर तब खूब बर्फ पड़ती है और सर्दियां होती हैं।'' ''ओह !'' वीटा सोचते हुए कहती है, वह शिशु को दूध पिलाती है और उसे ठंड से बचाने के लिए कंबल से ढकने में मां की मदद करती है। ''तो चलो हैलोवीन मनाते हैं...''

आलू के खेत में इश्माइल मार्जरी की मदद करता है और आखिरी आलुओं को इकट्ठा कर मकान के पास नोहस् आर्क के बखार में रखवाता है। ''खैर !'' वह वीटा से चिंतित भाव से कहता है, ''अगर ये हर दिन एक आलू खाएं तो शायद सर्दियां काट ही लेंगे।'' ''अरे मुझे पता है इश्माइल !'' वीटा कहती है, ''अगर तुम अपनी भेड का कुछ ऊन हमें दो तो हम तुम्हें सूअर दे सकते हैं क्योंकि हमारे पास वैसे भी काफी भुना हुआ मांस।'' ''ठीक है पर तुम्हारा सूअर जिंदा है या मरा हुआ?'' ''वह तो मर चुका है। हम उसके मांस को धुंआ देकर तैयार कर देंगे ताकि वह कुछ महीनों चल सके और तब तक बसंत आ जाएगा और कांच के सूअर के फिर से बच्चे होंगे और हमें मांस की चिंता नहीं रहेगी।''

और यों खेल चलता रहता है। जब हम इस पर विचार करते हैं कि ये बच्चे (और उनके सरीखे तमाम दूसरे बच्चे) अपने खेल में क्या करते हैं तो लगता है कि वह सच में विलक्षण है। वे एक ही समय में एक नाटक लिखते हैं, उसका निर्देशन करते हैं और उसका निर्माण भी करते हैं। हम वयस्कों के लिए बिल्कुल अकेले भी ऐसा करना कठिन सिद्ध होगा और फिर ये दोनों तो साझेदारी में यह सब कर रहे हैं। उनमें से एक जो भी खेल में एक नया पक्ष जोड़ता है दूसरे को उससे निपटना पड़ता है और तो और किसी गंभीर नाटक लेखक की ही तरह उन्हें ईमानदारी भी बरतनी होती है। वे जैसे भी चाहें मंच सज्जा करते हैं और तब वहां मनचाहा घटनाक्रम प्रारंभ कर देते हैं । पर एक बार जब वह घटना शुरू हो जाती है तो उन्हें उसे उसके स्वाभाविक क्रम में चलने देना पड़ता है। नैन्सी वॉलेस इस अध्याय में आगे संकेत करती हैं कि गुड़ियों के खेल का हरेक पक्ष दरअसल वास्तविक जीवन से लिया गया होता है। जो बच्चे यह खेल खेलते थे वे गांव में रहते थे, अपने भोजन की अधिकांश वस्तुएं उनका परिवार खुद उगाता था, जलावन भी खुद काटता था और उन्हें यह व्यवस्था भी करनी होती थी कि सर्दियों में पर्याप्त भोजन रहे; और वे ऐसे लोगों को भी जानते थे जो पशु पालते थे, उन्हें मार कर उनके मांस को बचाए रखने के लिए उसे धुंआ देते थे; उनके ऐसे दोस्त थे जिनके परिवार में बच्चे पैदा हो रहे थे; आदि-इत्यादि।

बच्चे वास्तविकता को समझने के लिए फंतासी का इस्तेमाल करते हैं वे एक ऐसा मानसिक मॉडल बनाते हैं जो सच में कारगर हो। अब क्योंकि उनका अनुभव बेहद सीमित होता है उनके लिए ऐसा करना बेहद कठिन भी होता है। वे उस व्यक्ति के मानिंद होते हैं जो किसी जिगसॉ पहेली को मात्र दस प्रतिशत टुकड़ों से बनाने की कोशिश कर रहा हो। उन्हें रिक्त स्थानों को भरने के लिए

काल्पनिक टुकड़ों को ईजाद करना पड़ता है। हम वयस्क ऐसा करना पसंद नहीं करते। अगर हमारे पास पहले से पहेली के सभी या तकरीबन सभी टुकड़े न हों तो हम जिगसॉ पहेली को बनाना ही शुरू न करें। पर छोटे बच्चे उस वक्त तक इंतजार नहीं कर पाते जब तक उनके पास सभी टुकड़े न आ जाएं । अर्थात् वास्तविकता का एक सामन्जस्यपूर्ण तार्किक मॉडल बनाने के लिए वे सभी आवश्यक सूचनाएं और अनुभव इकट्ठा न कर लें। उन्हें वास्तविकता का अभी ही कुछ न कुछ अर्थ निकालना होता है। उनकी फंतासी या कल्पना वास्तविकता से ही उपजती है, वास्तविकता से जुड़ती है और व्यापक वास्तविकता की ओर बढ़ती है। छह वर्षीय वीटा पैसों की रहस्यमय दुनिया को अपनी मां के कैंसल किए हुए चैकों से या हमारे कार्यालय के टाइपराइटर पर स्वयं द्वारा टाइप किए गए ''फॉर्मो'' से तलाशती है। दूसरे बच्चे भी अन्य रास्तों से ठीक यही करते हैं।

जैनेट सार्केट ने एरिजोना से ग्रोइंग विदाउट स्कूलिंग को अपने साढ़े चार वर्षीय बेटे के बारे में लिखा था :

हाल में वह अपने पसंदीदा विषयों के बड़े विस्तृत व बारीक चित्र बनाने लगा है, जैसे बचाव हेलीकॉप्टर, गहरे समुद्र के गोताखोर, डाकू और पुलिस। जब वह चित्र बन चुकता है, मैं उससे उसके बारे में बताने को कहती हूं। वह एक वाक्य में समूचा वर्णन देता है जैसे, ''एक सबमरीन में चार गोताखोर हैं''; ''यह हाइड्रोफौइल सौ फीट लंबी है।'' यह सब मैं उसके चित्र पर या कागज की अलग पट्टी पर (उसकी अनुमति से) लिख डालती हूं। वह फेल्ट मार्कर का रंग खुद चुनता है। हम वह वाक्य कुछेक बार साथ-साथ पढ़ते हैं।... अगला चरण है अलग-अलग शब्दों को 3 गुणा 5 आकार के कार्डों पर ठीक उसी रंग से लिखना जो चित्र पर लिखे वाक्य का है। तब मैं कार्ड मिला देती हूं और वह सही शब्द को चित्र पर लिखे वाक्य से मैच करता है। तब वह उसी वाक्य को कार्डों से बनाता है, यह मानते हुए कि वे ट्रेन के डिब्बे हैं खड़ी पाई हमेशा का रसोई घर होती है और कैपिटल अक्षर हमेशा इंजन।...''

जब यह नन्हा वाक्य के पहले अक्षर को 'इंजन' कहता है या खड़ी पाई को ''रसोईघर'' तो वह शब्द सीखने की क्रिया को वास्तविकता से जोड़ता होता है, वह भी पूरी मजबूती से ताकि भुलाया न जा सके; किसी ऐसी चीज से जोड़ता है जिससे वह पहले से परिचित है और यों उस पर काबिज हो जाता है। जैसा सेमोर पैपर्ट, ''माइन्डस्टॉर्म'' में कहते हैं - ''कुछ भी सीखना तब आसान बन जाता है जब हम उसे अपने मॉडल्स के संकलन में आत्मसात कर लेते हैं। यही बच्चे करते हैं और सच में बखूबी करते हैं। वे नए अनुभवों और विचारों को अपने पास मौजूद अनुभवों और विचारों से जोड़ते हैं। जोड़ने का यह तरीका अक्सर फंतासी होता है । हम चाहे कितने भी चतुर क्यों न हों यह काम हम उनके लिए नहीं कर सकते। हम उनकी फंतासी की भविष्यवाणी नहीं कर सकते, न उसे नियोजित या नियंत्रित कर सकते हैं, न ही अपने उपयोग के लिए उन्हें तोड़-मरोड़ सकते हैं। हम जो कर सकते हैं वह इतना भर है कि ठीक उनकी वास्तविक भोजन की थाली की ही तरह उनकी मानसिक भोजन की थाली पर उस तरह का खाना परोस दें, जैसा वे खाना पसंद करते हैं।''

कैरल केंट ने टेक्सस से हमें अपने बेटे के रेलगाड़ी प्रेम के बारे में लिखा :

उसकी दूसरी क्रिसमिस को हमने उसे चाबी भरने वाली रेलगाड़ी दी जो चक्राकार पटरियों पर चलती थी। रॉबर्ट बेहद खुश हुआ। अगली क्रिसमस को हम रेलगाड़ी से फ्लौरिडा गए और आए और एक दस डिब्बों वाली छोटी प्लास्टिक ट्रेन ले गए जिसके साथ वह पूरे रास्ते खेलता रहा। उसके तीसरे वर्ष के बसंत में हमने उसे चाबी से चलने वाली रेलगाड़ी दी जिसका काला भाप का इंजन था जिस पर रुपहले रॉड़ लगे थे, एक कोयले का डिब्बा, बैठने का डिब्बा और रसोई का डिब्बा था। रॉबर्ट को यह रेलगाड़ी बेहद प्यारी लगी। यद्यपि उसने जल्दी ही पटरियों को खोल डाला, पर उन्हें खुद वापस जोड़ना भी सीख लिया। अगले कई महीनों तक वह फर्श पर पसरे अपनी खटारा रेलगाड़ी के परे अपनी कल्पना की रेलगाड़ी को एकटक निहारा करता था...।

4 जुलाई 1979 को म्यूजियम ऑफ हिस्ट्री एण्ड टेक्नॉलजी में हम रेलगाड़ी प्रदर्शनी वाले हिस्से में पहुंचे जहां तमाम अन्य चीजों के साथ एक भारी भरकम भाप-इंजन था जिसके दोनों ओर सिग्नल की बत्तियां लगी थीं। हर दस मिनट बाद भाप के इंजन की ध्वनि समूचे कक्ष में फैल जाती और सिग्नल जलते व घंटियां बजने लगतीं मानो इन्जन किसी स्टेशन में घुस रहा हो, तब वापस निकल रहा हो। रॉबर्ट पूरा दिन वहीं गुजारने को तैयार था और हम काफी बार यह सब दोहराते देखते रहे। उसके पास एक रेलरोड हैट था, जिसे वह सारे दिन पहने रहा था। इसके बाद जब भी हम घर से बाहर निकलते वह उसे पहनता। उसी माह हमें पता चला कि एलेक्जेन्ड्रिया से बार्लट बिले तक एक भाप वाली भ्रमण रेलगाडी चलती है। हमने इस यात्रा के लिए अपने नाम लिखवाए।

इस यात्रा ने रॉबर्ट को रेलगाडियों का गुलाम बना दिया । हमें हर सप्ताह पुस्तकालय से रेलगाड़ी पर चार-पांच पुस्तकें लानी पड़तीं। रॉबर्ट अब 'रॉबर्ट रेलगाड़ीवाला' बन गया, उसकी टोपी और रूमाल पोशाक का आवश्यक भाग थे। अपनी तिपहिया

साइकिल को वह लगभग लगातार रेलगाड़ी की मानिंद जोरदार आवाजें निकालते हुए चलाता कि राह चलते लोग दुखी हो उसे घूरते थे। तब रॉबर्ट को अपने कुछ रिकॉर्डों में रेलगाड़ी के गीत मिल गए। वह रिकॉर्ड प्लेयर के पास, अपनी टोपी लगाए , खटारा भाप के इंजन को थामे बैठ जाता और बार-बार उन गीतों को सुनता । हैलोवीन के कुछ पहले मुझे रेलगाड़ी की ध्वनियों का एक रिकॉर्ड मिला, जो उसे बेहद पसंद आया।

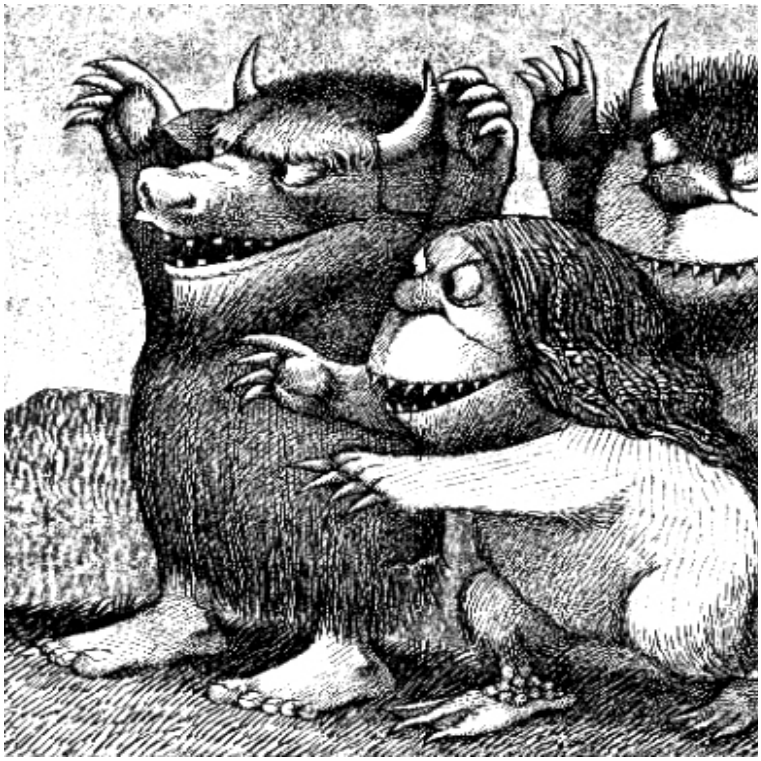

मैंने सोचा कि राबर्ट के चौथे जन्मदिन पर हम उसे एक नई चाबी से चलने वाली रेलगाड़ी भेंट करेंगे पर तब पता चला कि उस तरह की गाड़ियां अब बननी बंद हो चुकी हैं। एक हॉबी स्टोर में कुछ मॉडल ट्रेनें उपलब्ध थीं। पर सबसे सस्ती की कीमत पिचहत्तर डॉलर थी। जाहिर है कि रॉबर्ट की आंखों में तो रेलगाड़ियां बस चुकी थीं। उसने मुझे साफ-साफ बताया कि उसे तो उनमें से ही एक चाहिए। मैंने समझाया, ''रार्बट ये ट्रेनें बड़े बच्चों के लिए बनी हैं और बड़ी मंहगी हैं। तुम अपनी रेलगाड़ियों को खोल डालते हो पर इन्हें खोला नहीं जा सकता। इन्हें बेहद सावधानी से रखना पड़ता है। तुम कुछ और बड़े हो जाओ तब ही इनमें से एक तुम्हारे लिए खरीदी जा सकेगी।'' उसने मेरा हाथ छुआ और पूरी गंभीरता से बोला ''मां, मैं तो पहले ही बड़ा हो चुका हूं।''

क्रिसमस पर रॉबर्ट के दादा-दादी ने एक नया रेलरोड हैट, दो रूमाल, भाप वाली ट्रेन की एक फोटो और एक बड़ी-सी फ्लैशलाइट दी जो रेलगाड़ी वाले काम में लेते हैं। वह नई टोपी और फ्लैशलाइट ले ट्रेन रिकॉर्ड सुनने बैठ गया। अगले दिन हमें उसकी नानी की ओर से क्रिसमस चैक मिला। हमने एकमत हो तय किया कि यह पैसा उसकी नई रेलगाड़ी के लिए काम में लिया जाएगा। चैक और अपनी बचत मिलाकर रॉबर्ट के पास अपनी पसंदीदा रेलगाड़ी लायक पैसे आ चुके थे। एक बड़े हॉबी स्टोर में उसने एक भाप का इंजन, डीजल इंजन, एक बैठक डिब्बा, एक सपाट डिब्बा, लाल रसोई डिब्बा और एक पशुधन डिब्बा, जिसमें आठ नन्हीं गाएं भी थीं, एक सामान चढ़ाने वाला प्लेटफॉर्म और पशुधन ट्रक, पसंद किया और खरीदा।

सभी डिब्बों को जोड़ रेलगाड़ी बनाने के बाद उसे बताया गया कि रेलगाड़ी को कैसे चलाया जाता है। हमने कई बार पुस्तकालय से जॉर्ज जैफो की 'बिग बुक ऑफ रियल ट्रेन्स' ली है। यह किताब क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान भी घर पर ही थी। पुस्तक में सभी तरह के रेल डिब्बों के बड़े-बड़े चित्र थे और कुछ पंक्तियों में उनका वर्णन भी। एक दिन मैं स्कूल रूम में दाखिल हुई तो पाया कि रॉबर्ट सूजी को अपनी 'रेल कथा' सुना रहा था। उसने किताब मुझे थमा दी और मेरी मदद मांगी। वह चाहता था कि अगर वह सुनाते हुए कुछ भूल जाए तो मैं उसे याद दिला दूं। उसने सबसे पहले तो अपने इंजन को उसकी पटरियों पर सावधानी से रखा, उसके बाद उसने कोयले वाला डिब्बा जोड़ा ''स्टील के बने इस डिब्बे में कोयला ले जाया जाता...।'' यों उसने अपनी रेलगाड़ी के हरेक डब्बे के बारे में पुस्तक में लिखे वाक्य दोहराए, सिर्फ दो बार ही भूल सुधारने की जरूरत पड़ी। कुछ दिनों बाद हमने एक लालटेन बनाई और राबर्ट ने वे सारे लालटेन संकेत सीख लिए जो किताब में बताए गए थे। उसने रेलगाड़ी के अपने सारे चित्र, अपनी ट्रेन टेबल के पास वाली दीवार पर टांग दिए। कई बार वह रात को अंधेरे में पढ़ाई के कमरे में आना पसंद करता है और अपनी फ्लैशलाइट के प्रकाश में अपनी रेलगाड़ी को देखता है।

रॉबर्ट रेलगाड़ी वाले के विषय में यह सब उसके चौथे जन्म दिन के समय लिखा गया था। अब वह छह साल का हो चुका है और मुझे पता करना है कि उसका रेलगाड़ी प्रेम उसे कहां ले गया है। इसी बीच यह सब पढ़ना बड़ा उत्तेजक व मर्मस्पर्शी लगता है।

हम अपनी कल्पनाओं से भी उतना ही पोषण पाते हैं। जितना अपने भोजन से। वे दुनिया को हमारे सामने खोलती हैं। रॉबर्ट के इंजन उसे भी ठीक उसी तरह खींचते हैं जैसे वे उसकी मालगाड़ी के डिब्बों को या जैसे मुझे फंतासियां खींचती हैं। एक पुस्तक को लिखने का श्रम प्रारंभ करने के पहले मुझे यह कल्पना करनी होती है कि मैं उसे लिखना समाप्त कर चुका हूं। इतना ही नहीं यह भी कल्पना करनी होती है कि वह सफलतापूर्वक प्रकाशित हो चुकी है। जब तक पुस्तक मेरे मस्तिष्क में एक वास्तविक रूप नहीं धर लेती, मैं उसे लिखना प्रारंभ ही नहीं कर पाता।

'माइन्डस्टॉर्म्स' में सेमोर पैपर्ट जो एम. आई. टी. में गणित व शिक्षा के प्रोफेसर हैं, दुनिया में प्रवेश करने के सबसे महत्त्वपूर्ण रास्तों में से एक के बारे में लिखते हैं :

''मैं दो वर्ष का हुआ उसके भी पहले मोटर गाड़ियों के प्रति मेरा सघन जुड़ाव बन चुका था। मेरी शब्दावली का एक बड़ा भाग गाड़ी के हिस्सों के नामों का था। मुझे ट्रांसमिशन प्रणाली के हिस्सों को जानने पर खासा गर्व था : गीयर बॉक्स और खासतौर से डिफरेन्शियल। गीयर काम कैसे करते हैं यह जानकारी मुझे सालों बाद मिली; पर एक बार समझने के बाद गीयरों से खेलना मेरा पसंदीदा खेल बन गया । मैं गोलाकार वस्तुओं को गीयर के समान एक दूसरे के विपरीत घुमाता रहता था और स्वाभाविक ही था कि मैंने अपने इरैक्टर सेट से जो पहली चीज बनाई वह एक अनगढ़ सी गीयर प्रणाली ही थी।

मैं दिमाग में चक्रों को घुमाने में तथा-कार्य-कारण की शृंखला बनाने में दक्ष हो गया : ''अगर यह इस दिशा में घूमे तो वह उस दिशा में घूमेगा।'' मुझे डिफरेन्शियल गीयर जैसी प्रणाली में खास आनंद आता था जो सरल रेखीय कार्य-कारण के अनुसार काम नहीं करती क्योंकि ट्रांसमिशन शाफ्ट में गति, घर्षण के अनुसार विभिन्न प्रकार से दोनों पहियों में बंटती है। मुझे उस वक्त की अपनी उत्तेजना आज भी याद आती है जब मुझे पता चला कि कोई प्रणाली अनम्य रूप से निर्धारक न होकर भी वैध व बोधगम्य हो सकती है।

मेरा विश्वास है कि डिफरेन्शियल्स के साथ काम करना मेरे गणितीय विकास के लिए उस सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण रहा, जो मुझे स्कूल में सिखाया गया। मॉडल्स के रूप में गीयर अपने साथ कई अमूर्त्त अवधारणाएं मेरे दिमाग में ला सके। इसके दो उदाहरण मुझे स्पष्ट याद हैं। एक तो यह कि मैं पहाड़ों को गीयरों के रूप में देखता था और दूसरे जब पहली बार दो परवर्ती समीकरणों से मेरा पाला पड़ा (उदाहरण $3x \times 4y = 10$) तो दिमाग में तत्काल डिफरेन्शियल कौंधा। मैंने फौरन एक्स तथा वाय के संबंध का एक गीयर बना डाला, जब तक मैंने यह विचार कर लिया कि प्रत्येक में कितने खांचे चाहिए होंगे तब तक समीकरण के साथ मेरी दोस्ती हो चुकी थी।

एक दिन मुझे यह जानकर बेहद आश्चर्य हुआ कि कुछ वयस्क, बल्कि अधिकांश वयस्क, गीयरों के जादू को न तो समझते हैं, न उन्हें उसकी परवाह ही है। अब मैं खुद भी गीयरों के बारे में ज्यादा नहीं सोचता पर जो प्रश्न उपरोक्त बात जानने के बाद मन में उठा था उससे मैं कभी विमुख नहीं हुआ हूं। प्रश्न था कि जो बात मेरे लिए इतनी सरल है वह दूसरे लोगों के लिए इतनी कठिन कैसे हो सकती है ? .... क्रमश: मैं उस तथ्य को गढ़ने लगा जिसे मैं अब भी सीखने के विषय में बुनियादी तथ्य मानता हूं : कोई भी बात तब सरल बन जाती है जब आप उसे अपने मॉडलों के संकलन में आत्मसात कर लेते हैं।

डिफरेन्शियल गीयरों के साथ अपने परिचय के विषय में कई पक्षों की याद मैं स्वयं को अक्सर दिलाता हूं। पहली बात तो यह याद करता हूं कि किसी ने मुझे उनके बारे में सीखने को नहीं कहा था। दूसरी यह याद करता हूं कि गीयरों के साथ मेरे रिश्ते में भावनाएं व प्रेम था। तीसरी यह याद करता हूं कि गीयरों के साथ मेरा पहला सामना अपने जीवन के दूसरे साल में हुआ था। अगर कोई ''शिक्षा मनोविज्ञानी'' उस समय इस परिचय के प्रभाव को ''वैज्ञानिक रूप से'' ''नापने'' की कोशिश करता तो वह संभवत: नाकाम रहता ...।

आज की कोई मदाम मॉन्टेसरी, मेरे किस्से को सही मान, बच्चों के लिए एक गीयर सेट तैयार कर सकती है। यों सभी बच्चों को ठीक वैसा अनुभव मिल सकता है जैसा मुझे हुआ था। पर यह आशा करना दरअसल कथा के सार से चूकना होगा, क्योंकि हुआ यह था कि मैं गीयरों से प्रेम करने लगा था।''

हमें अपने मानसिक मॉडलों का पहला संकलन अपनी फंतासियों के माध्यम से मिलता है। जाहिर है कि पहला कदम निश्चित रूप से स्वप्न, रोमांस, प्रेम के स्तर पर ही होता है। दो वर्षीय सेमोर के लिए मोटर गाड़ियां रहस्य व आनंद का स्रोत थीं, और वह भी उस समय जब वह यह समझता तक न था कि उनमें दरअसल है क्या। इससे पहले कि वह यह तलाश पाता कि वे कैसे काम करते हैं, उनका उपयोग क्या होता है, उसे वह पहला गीयर खूबसूरत व अद्‌भुत वस्तु लगी। मैं कह चुका हूं कि चार वर्षीय रॉबर्ट रेलगाड़ी वाले को उसकी ट्रेनों ने दुनिया की ओर खींचा था। पर हम यह भी कह सकते थे कि तमाम वास्तविक मॉडलों वाली व काल्पनिक रेलगाड़ियां उस तक दुनिया को खींच लाई थीं। ये दोनों ही प्रक्रियाएं समान ही तो हैं। क्योंकि जैसे-जैसे हम दुनिया में

आगे बढ़ते जाते हैं वैसे-वैसे हम उसका अधिकाधिक भाग अपने अंदर जज़्ब करते जाते हैं। जैसे-जैसे बच्चे दुनिया में प्रवेश करते हैं, दुनिया उनमें प्रवेश करती चलती है। यह प्रक्रिया कल्पना से, फंतासी से प्रारंभ होती है और फंतासी ही उसे आगे जारी रखती है। रॉबर्ट के रेलगाड़ियों के प्रति प्रेम ने और पैपर्ट के गीयर प्रेम ने उन्हें वास्तविक रेलगाड़ियों और गीयरों के विषय में अधिक जानने को उकसाया।

कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि हमारी सभी फंतासियां आवश्यक रूप से ऐसा सुफल देंगी। पैपर्ट का गीयर प्रेम उसे गणित की ओर ले गया जो उसके जीवन का कार्य बना। पर ऐसा हमेशा नहीं होता। जब मैं चार-पांच साल का था तो मुझे नावों, जहाजों और विशाल समुद्री जहाजों के छायाचित्र देखना और उनके चित्र बनाना बेहद अच्छा लगता था। एक नाव का आकार तो मुझे इतना अच्छा लगा था कि मैंने उसका फोटो बड़ा संभाल कर रख लिया और बीच-बीच में उसे निकाल मैं खुद को विशेष उपहार देने के लिए उसे निहारता था। पांच साल की उम्र में मुझे अपनी निजी नाव की इच्छा तक न थी, बल्कि इसका क्या अर्थ होगा मैं यह कल्पना तक नहीं कर सकता था। मैं सिर्फ उसका फोटो देखना चाहता था। कुछ सालों बाद देश की पहली सुसज्जित रेलगाड़ियां, यूनियन पैसिफिक की पीली रेलगाड़ी और बर्लिंग्टन जेफर्स की स्टेनलैस स्टील रेलगाडी मेरी कल्पना पर छा गई।

बावजूद इसके मुझे एक पल के लिए भी नावों या रेलगाड़ियों का डिजाइनर बनने का विचार नहीं आया। वे कैसे बनती हैं या कैसे काम करती हैं, इसमें भी मेरी कोई रुचि नहीं थी। मेरी फंतासियों ने मेरे लिए बस इतना भर किया और वह भी कोई छोटी बात नहीं थी - कि मुझमें यह भावना जगाए रखी कि दुनिया कई अर्थों में एक बेहद मोहक और सुंदर जगह है। आज भी वस्तुओं के आकार में मेरी रुचि बरकरार है और मैं किसी खूबसूरत-सी उपयोगी वस्तु को देखकर उद्वेलित होता हूं।

पर ऐसे कई लोग हैं जिनको अपने बाल्यावस्था की फंतासियों और प्रेम तथा अपने वयस्क जीवन के बीच ऐसा धुंधला-सा रिश्ता भी नहीं याद होता। पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। ये फंतासियां अगर उन वस्तुओं के विषय में हों, जिनसे घृणा करने या डरने के बजाए बच्चे उनसे प्रेम करते हों, तो वे उन्हें दुनिया की ओर और दुनिया को उनकी ओर अवश्य खींचेंगी। पर इसके विपरीत अगर ये फंतासियां शर्म, पीड़ा या त्रास की हों तो वे बच्चों को इस विशाल बाहरी दुनिया से परे उन्हें स्वयं के अंदर धकेल देंगी। सपनों की ऐसी दुनिया में कैद कर देंगी जो स्वयं उनके द्वारा निर्मित हो।

कल्पना करना बच्चों के लिए कितना भी महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, हम उनसे चाह कर यह नहीं करवा सकते हैं। और अगर इसकी चेष्टा करें भी तो हम उन्हें नुकसान ही पहुंचाएंगे। अब मैं यह अधिक स्पष्टता से समझता हूं कि मुझे पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शाला का एक आम दृश्य इतना नापसंद क्यों रहा है। हम वहां किसी वयस्क को पियानो या गिटार बजाते देखते हैं और बच्चों से कहा जाता है कि वे यह कल्पना करें कि वे पेड़ या चिड़िया या हिमलव या जंगली फूल या कुछ और हैं। बच्चे जल्दी ही सीख जाते हैं कि जब कोई कहे कि ''हिमलव बनो'' तो उन्हें अपनी बांहें हिलानी हैं और गोल घूमना है और कमरे में इधर-उधर कूदना है। क्योंकि उन्हें स्कूल में इधर-उधर घूमने, चलने-फिरने के मौके कम मिलते हैं। वे इस अवसर को खुशी से लेते है। पर हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि वे सच में इसकी कल्पना कर रहे हैं। वे ठीक वही कर रहे होते हैं जिसकी अपेक्षा वयस्क उनसे करते हैं और जिसे वे जानते भी हैं। वे यह ढोंग करते हैं कि वे कल्पना कर रहे हैं और उसका आनंद उठा रहे हैं। क्या किसी ने भला बच्चों को अपने निजी जीवन में हिमलव बनने की कल्पना करते या खेलते देखा है ? वे तो खेल में वयस्क होने का, राजा या रानी होने का, ट्रक ड्राइवर या डॉक्टर, मां या पिता होने का स्वांग ही रचते हैं। अगर हम बच्चों से कल्पना करवाते हैं तो ये नकली फंतासियां, टीवी की तैयारशुदा फंतासियों की ही तरह, उनके मन से असली फंतासियों को बाहर धकेल देंगी, जो दरअसल दुनिया में उनके अनुभवों से, दुनिया को समझने की आवश्यकता से, दुनिया से सहज होने की चेष्टा से उपजी होती हैं। ◆

अनुवाद : पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा